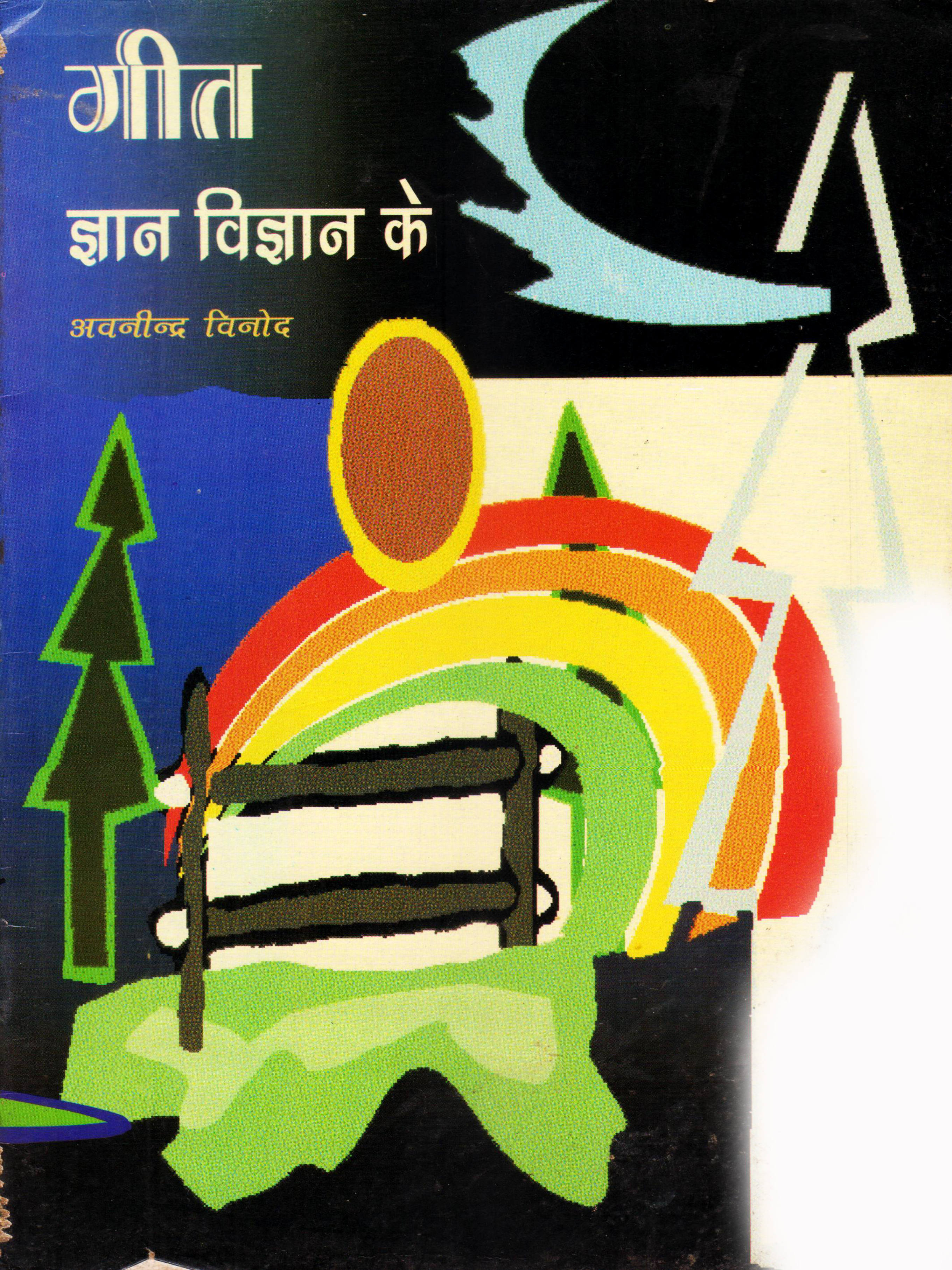
गीत
ज्ञान विज्ञान के

अवनीन्द्र विनोद

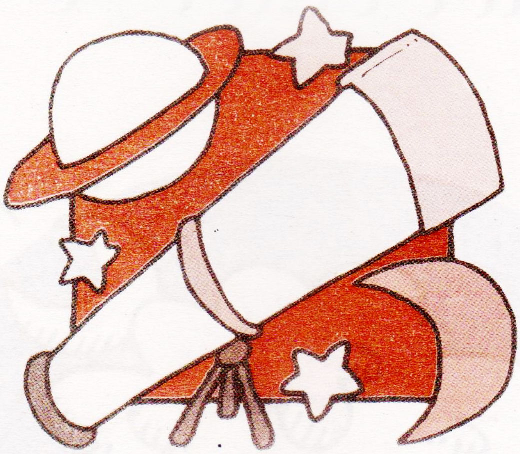


गीत

ज्ञान-विज्ञान के



अवनीन्द्र विनोद



ISBN : 978-81-8361-332-3

गीत ज्ञान-विज्ञान के (कविता)

पहला संस्करण : 1986
आवृत्ति : 2009

मूल्य : 30 रुपये

प्रकाशक
राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002

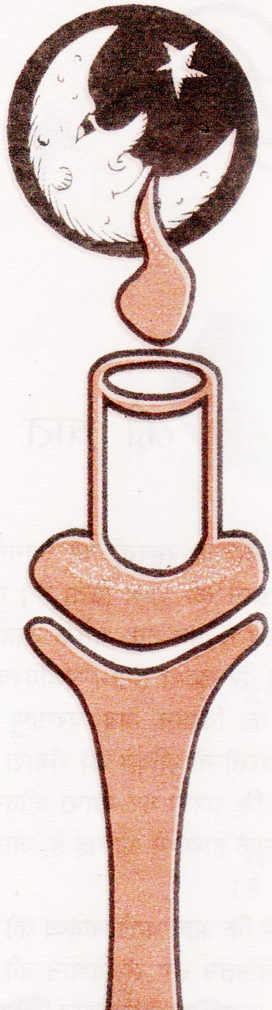
शाखाएँ : अशोक राजपथ, साइंस कॉलेज के सामने, पटना-800 006
पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-211 001

वेबसाइट : www.radhakrishnaprakashan.com
ई-मेल : info@radhakrishnaprakashan.com

मुद्रक
बी.के. ऑफसेट
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032

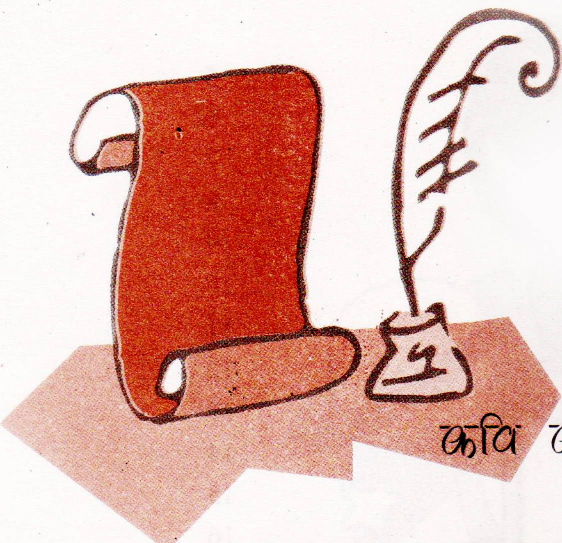
GEET GYAN-VIGYAN KE
Poems by Avnindra Vinod

गीत-तालिका









कवि की बात

मानव-मस्तिष्क की जिज्ञासा, प्रकृति के रहस्यों को जानने की अभिलाषा तथा उसके जीवन की आवश्यकताओं ने विज्ञान को जन्म दिया है। यह बीसवीं सदी की अवसान बेला है। विज्ञान के बल पर मानव ने अब तक अनेक साहसपूर्ण चुनौतियों को स्वीकार करके विजय प्राप्त की है। धरती पर व्याप्त तमाम अंधविश्वासों व काल्पनिक मान्यताओं को ध्वस्त करते हुए, 'कलयुग' का विज्ञान, अब 'परमाणु युग' में प्रवेश कर चुका है।

विज्ञान ने जहाँ एक ओर धरती के जीवन को सँवारा है, वहीं दूसरी ओर आज वह इतना विध्वंसक भी बन चुका है कि धरती पर व्याप्त जीवन को अनेक बार समूल नष्ट करने की अपरिमित शक्ति भी उसके हाथों में आ गई है, जो मानवता तथा जीवन-अस्तित्व के लिए गंभीर ख़तरे का संकेत है।

आवश्यकता इस बात की है कि आने वाले भविष्य को सँवारने में, महत्त्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करने वाले बच्चों को, सरलतम ढंग से विज्ञान की कल्याणकारी चेतना से लैस किया जाए। उनके मस्तिष्क की ऊर्जा को स्वस्थ एवं रचनात्मक दिशा प्रदान की जाए। उत्तम बाल-साहित्य, विशेषकर गीत व कविताएँ, इस अभियान में निःसंदेह प्रभावकारी भूमिका अदा करने में सक्षम सिद्ध हो सकती हैं।

इसी दिशा में, इक्कीसवीं सदी की आगमन बेला में, ज्ञान-विज्ञान संबंधी गीतों का यह लघु संकलन, बाल-जगत् को समर्पित कर रहा हूँ। इन गीतों को पंक्तिबद्ध करने में मेरी पुत्री कुमारी नीलिमा विनोद की बाल-सुलभ जिज्ञासा ने काफी सहायता दी है। इस संकलन के गीत काव्य के परंपरागत आभूषणों से विहीन होते हुए भी अपने-अपने शीर्षकों के प्रति निष्ठावान बने रहें, यही मेरा प्रयास रहा है।

बाल-जगत् का स्नेह ही इन कविताओं का भविष्य होगा। मेरी अभिलाषा है—

"बच्चे हिन्दुस्तान के, अच्छे हिन्दुस्तान के,
पढ़ें ध्यान से, गाते जाएँ, गीत ज्ञान-विज्ञान के।"

—अवनीन्द्र विनोद



विज्ञान

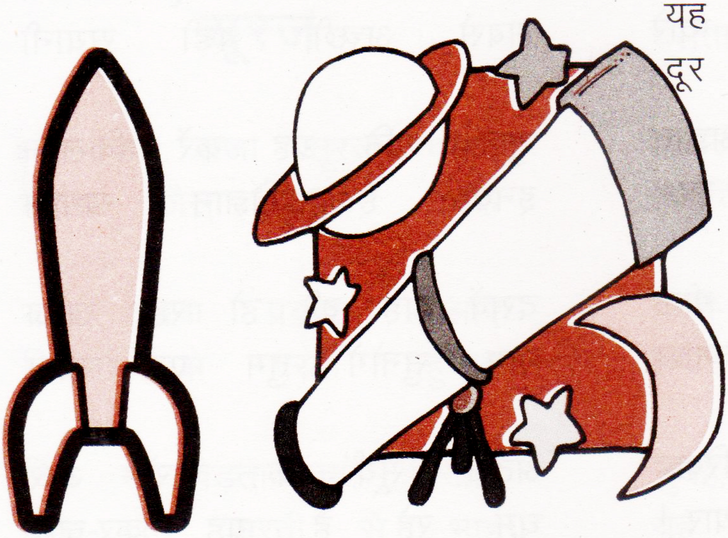
देखो, जाँचो, परखो, जानो
तब तुम किसी बात को मानो

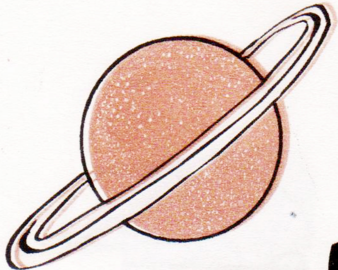
नित-नित नूतन करो प्रयोग
परिणामों का कर लो योग

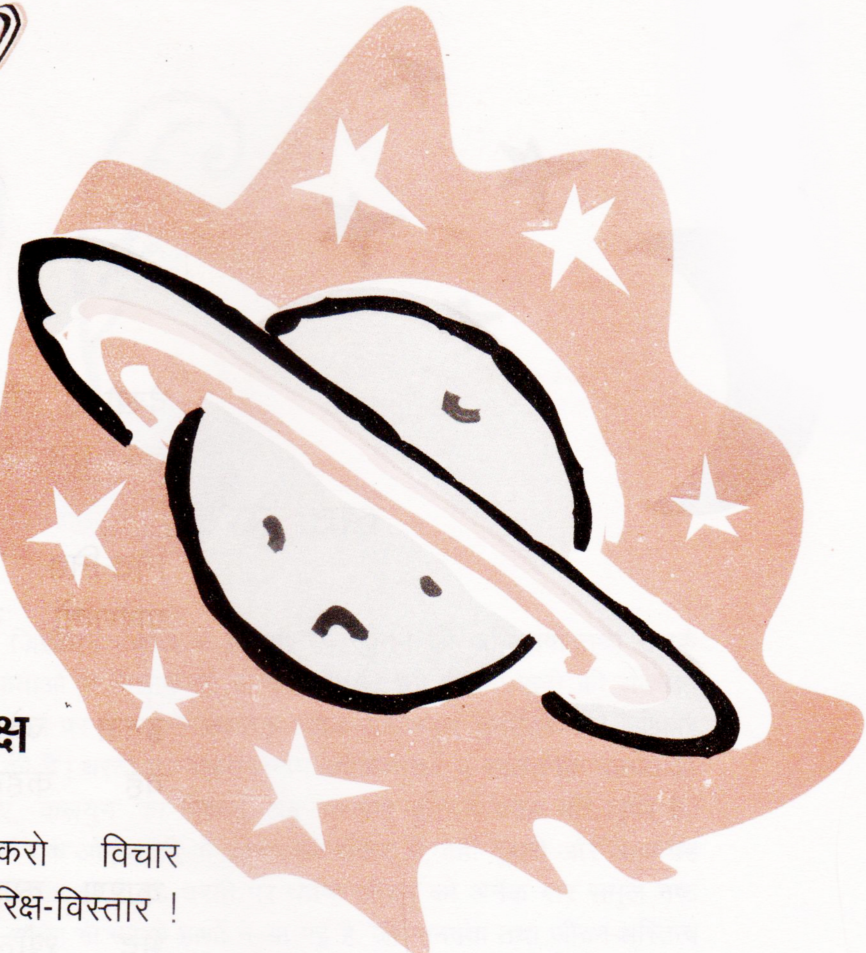
इनसे जो मिलता है ज्ञान
वह कहलाता है विज्ञान

कारण क्या है ? पता लगाये
भेद खोलकर हमें दिखाये

यह विज्ञान सत्य का रूप
दूर भगाये भय का भूत







अन्तरिक्ष

सोचो, मन में करो विचार
कितना अन्तरिक्ष-विस्तार !

पृथ्वी, सूरज, चन्दा, तारे
अन्तरिक्ष में स्थित प्यारे

अन्तरिक्ष का अन्त अज्ञात
नीला नभ धरती के साथ

दहके स्थिर सूरज गोल
देता है प्रकाश अनमोल

नवग्रह सूरज के परिवार
बुध, बृहस्पति, मंगल, यार !

अरुण, वरुण, यम, पृथ्वी रानी
सबसे अच्छी, बड़ी सयानी

शुक्र, शनि ग्रह करें किलोल
इनका है विज्ञान खगोल

दसवें ग्रह की हो रही खोज
नाम सुनोगे तुम एक रोज़

अटल सूर्य के चारों ओर
घूम रहे हैं ग्रह कर-जोर



सूरज

नभ का राजा सूरज चमके
भट्ठी जैसा दहके, दमके

यह अपना प्रकाश फैलाए
किरणों से गरमी पहुँचाए

दिन में पड़ता हमें दिखाई
बहुत दूर धरती से, भाई

हम पर सूरज का उपकार
चलता है जीवन संसार

निकले पूरब, पश्चिम जाये
प्रतिदिन अपनी छवि दिखलाये

पृथ्वी-गति से हमें हो ज्ञान
स्थिर सूरज है गतिमान

सुबह, दोपहर होती शाम
यह सूरज का है वरदान



प्रकाश

सूरज की चमकीली किरनें
उजली और सुनहली किरनें

अँधियारे को दूर भगातीं
ज्योति-पुंज से धरा सजातीं

सात रंग किरनों में मानो
बै नी आ ह पी ना ला जानो

बै से बैंगनी, नी से नीला
आ आसमानी, हरा व पीला

ना से नारंगी, ला से लाल
सतरंगी किरनों का जाल

ऊपर लाल बैंगनी नीचे
इन्द्रधनुष में यह छवि दीखे

आँखों से प्रकाश की बात
हमको होती रहती ज्ञात



पृथ्वी

चन्दा सूरज जैसी गोल
अपनी पृथ्वी गोल-मटोल

मैगेलन ने पता लगाया
गोल धरा, सबको बतलाया

सूरज का कुछ निकला भाग
दहक रहा था जैसे आग

चारों ओर धुआँ था छाया
वर्षा ने इसको ठंडाया

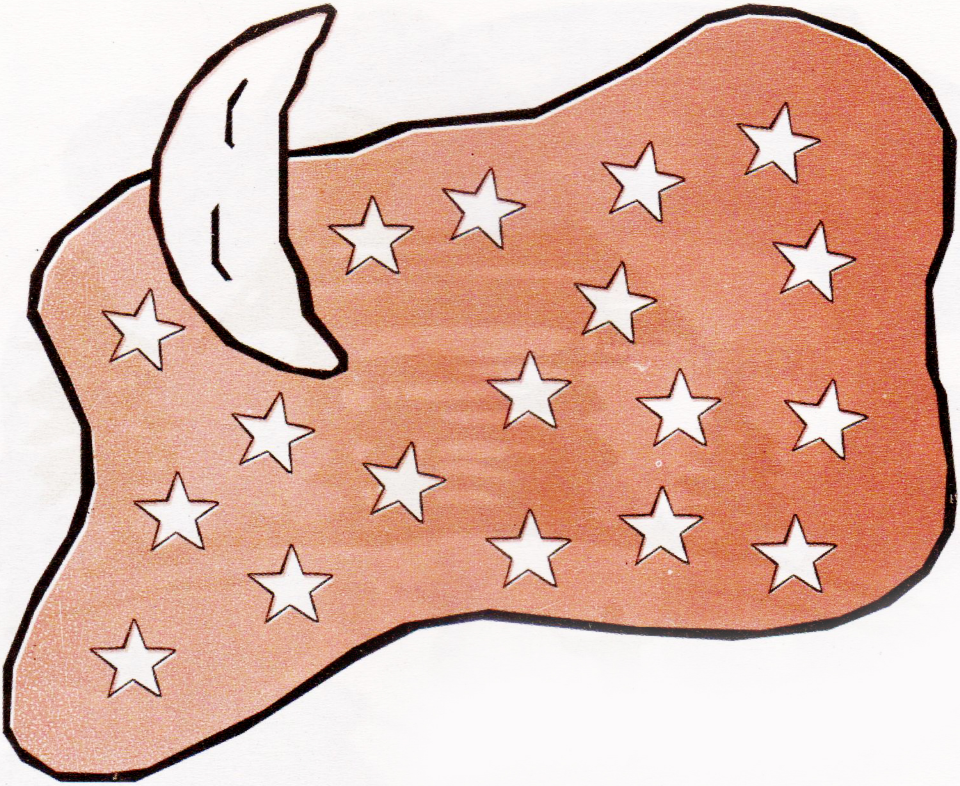
धीरे-धीरे यह ठंडाई
ख़रबों साल की बातें, भाई !

चढ़ी परत माटी की मोटी
ज्वालामुखी की दहकी चोटी

सागर, पर्वत, द्वीप हज़ार
इस पर है जीवन संसार

धरती का साज़ो-सामान
सूरज का सुन्दर अनुदान

एक भाग थल, बाक़ी पानी
इस पृथ्वी की यही कहानी



चन्द्रमा

हमको, तुमको ज्ञात है बात
चन्दा चमके सारी रात

नभ में निकला पीला गोला
'चन्दा मामा', बच्चा बोला

सूरज ही चन्दा चमकाता
सुन्दर, शीतल, मन हरषाता

यह पृथ्वी का उपग्रह एक
भरता रहता रूप अनेक

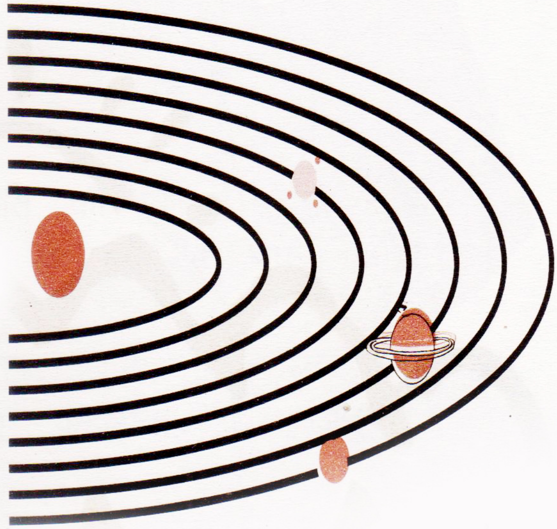
घूमे पृथ्वी के चहुँ ओर
छुप जाता जब होता भोर

उनतीस दिन में फेरा एक
धरती का करता अभिषेक

लाखों मील धरा से दूर
इस पर जीवन नहीं, हुज़ूर !

धन्य ज्ञान-विज्ञान की माया
चन्दा पर मानव हो आया

ग्रह-उपग्रह

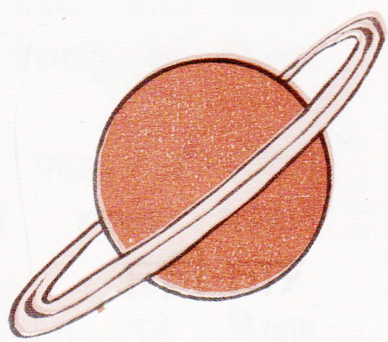


ग्रह सूरज के चारों ओर
घूमा करते, सुनो किशोर!

पृथ्वी संग आठ ग्रह और
सूरज है सबका सिरमौर

ग्रह का जो करता हो चक्कर
उसे पुकारो उपग्रह कहकर

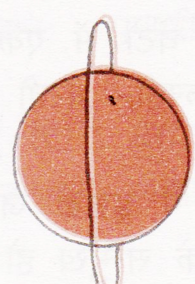
जैसे, ग्रह पृथ्वी है अपनी
चन्दा इसका उपग्रह, रजनी!

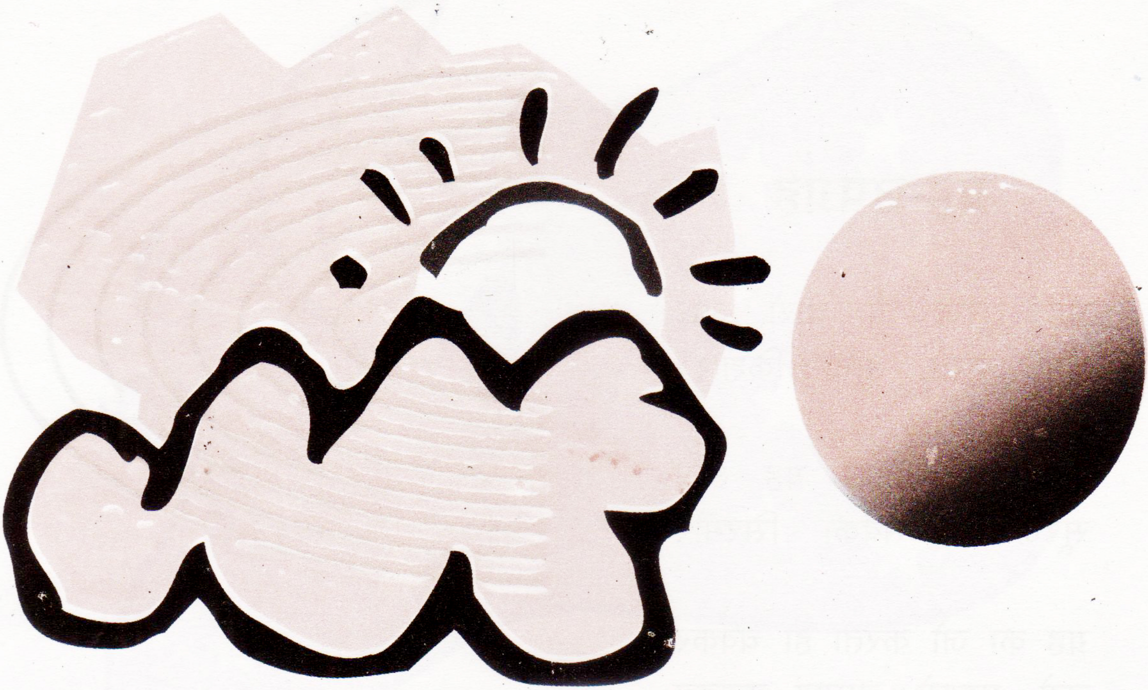


झिलमिल तारे और सितारे
बहुत दूर हैं पड़े बिचारे

ग्रह-उपग्रह से बड़े हैं भारी
इनकी खोज निरन्तर जारी

सारे ग्रह-उपग्रह गतिमान
स्थिर सूरज, बड़ा महान





रात-दिन

गोले जैसी अपनी धरती
एक धुरी पर घूमा करती

चौबीस घंटों में एक चक्कर
पूरा करती, धरती चलकर

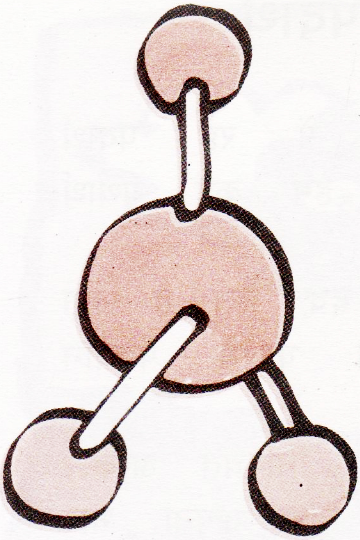
चक्कर में इसके जो हिस्से
सूरज के सन्मुख हो खिसके

उनमें दिन बाक़ी में रात
सचमुच तुम मानो यह बात

पश्चिम से पूरब की ओर
धरती घूमे जैसे चोर

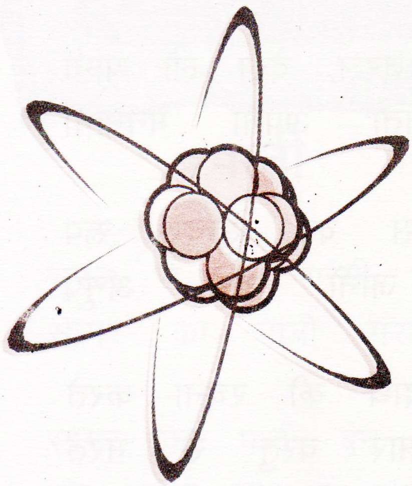


अणु



प्रकृति की सुन्दर रचना देखो
भय के भूत से बचना सीखो

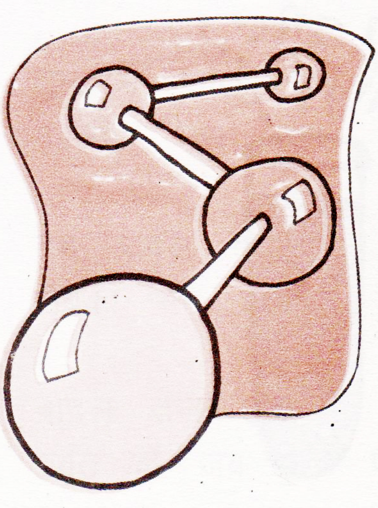
अंतिम, छोटा, चीज़ का भाग
अणु कहलाता है, अनुराग!



छोटे से छोटा कण होता
इसका बड़ा है लेखा-जोखा

अणु का सबसे छोटा हिस्सा
कहता है परमाणु का क़िस्सा

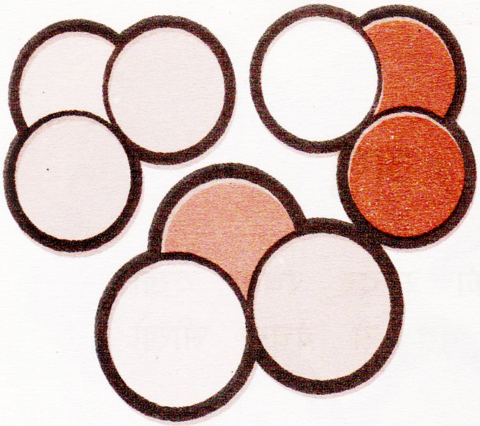
इसमें है पदार्थ की जान
यन्त्र करें इनकी पहचान



आँखों से न पड़े दिखाई
अद्‌भुत शक्ति समेटे, भाई!

इसमें बल-ताक़त है भारी
इसका है विज्ञान पुजारी

अणु का वैभव चहुँ दिशि छाया
कलियुग में अब अणुयुग आया



पदार्थ

तीन रूप में रहें पदार्थ
सही बात हम कहें यथार्थ

ठोस और द्रव, गैस है नाम
इनकी अब करिये पहचान

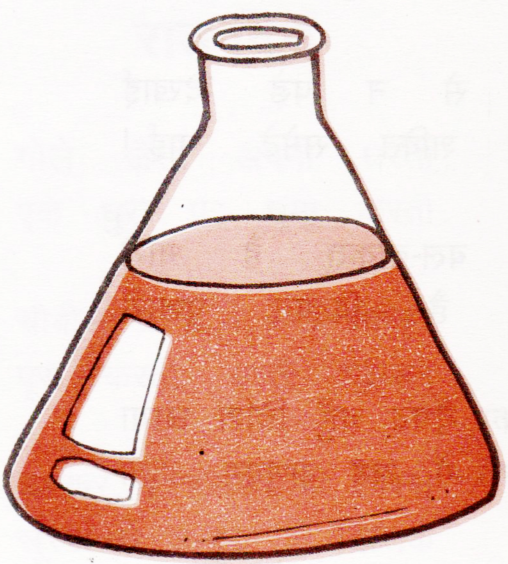
ठोस सुदृढ़, निश्चित आकार
रखते हैं कुछ अपना भार

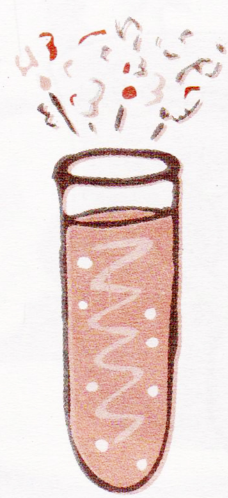


द्रव है तरल, देख लो पानी
बह जाता अपनी मनमानी

हवा गैस का सुन्दर रूप
देखो, जानो इसे अनूप

अणु, पदार्थ की रचना करते
यह संसार वस्तु से भरते







पानी

सूरज से जब गरमी पाता
सागर का पानी गरमाता

सागर का पानी बन भाप
उड़ जाता नभ में चुपचाप

नभ में जाकर वह ठंडाये
काला, भूरा रंग बनाये

तब बादल कहलाने लगता
सबका मन बहलाने लगता

बादल तेज़ हवा में उड़ते
पर्वत के जब पास पहुँचते

पर्वत से जाकर टकराते
तब बादल पानी बरसाते

इसी तरह पानी से पानी
पानी की है यही कहानी

हाइड्रोजन, आक्सीजन-गैस
जल की रचना करें, दिनेश !

आग



आग, प्राणवायु का रूप
यह सच है, मत मानो झूठ

ठोस-ठोस टकराते कसकर
घर्षण कर जाते हैं क्षण भर

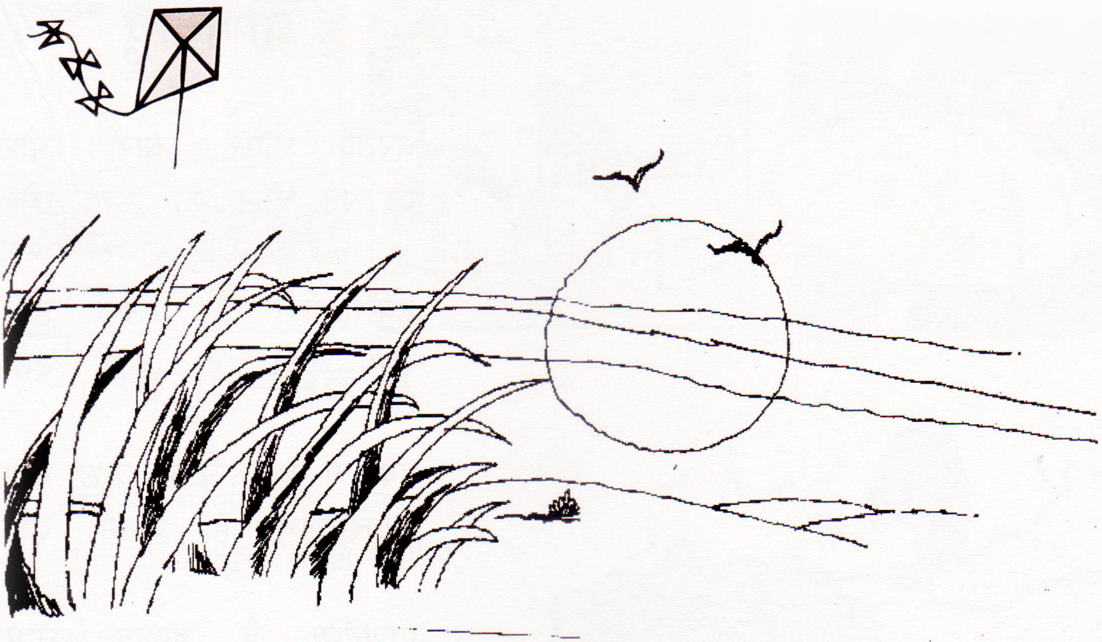
पैदा हो जाती चिनगारी
चम से चमके न्यारी-न्यारी

खुली हवा में यह चिनगारी
पैदा करे आग गुणकारी

जलने वाली चीज़ें पकड़े
फिर अपने बन्धन में जकड़े

लेकर बालू, मिट्टी, पानी
हमें चाहिए आग बुझानी

सावधान तुम आग से रहना
अच्छी बात सभी से कहना



हवा

हवा, समीर पवन या वायु
हवा से जीवन पाता आयु

भरी हुई है चारों ओर
इसका कोई ओर न छोर

धरती पर है इसका दाब
वायु-दाब का एक हिसाब

चीज़ों में होता जो भार
वायु-दाब उसका आधार

इसके अणु जब हों गतिमान
चले हवा, हमको हो ज्ञान

तेज़ हवा आँधी बन जाये
ज़रा देर में क़हर मचाये

कानों तक ध्वनि या आवाज़
पहुँचाने का करती काज

ध्वनि से हवा में कम्पन होता
सुन लेता है कान अनोखा

बिना हवा के ध्वनि बेकार
चाहे जितनी करो पुकार

प्राणवायु

धरती ऊपर, चारों ओर
दो सौ मील का ऊँचा छोर

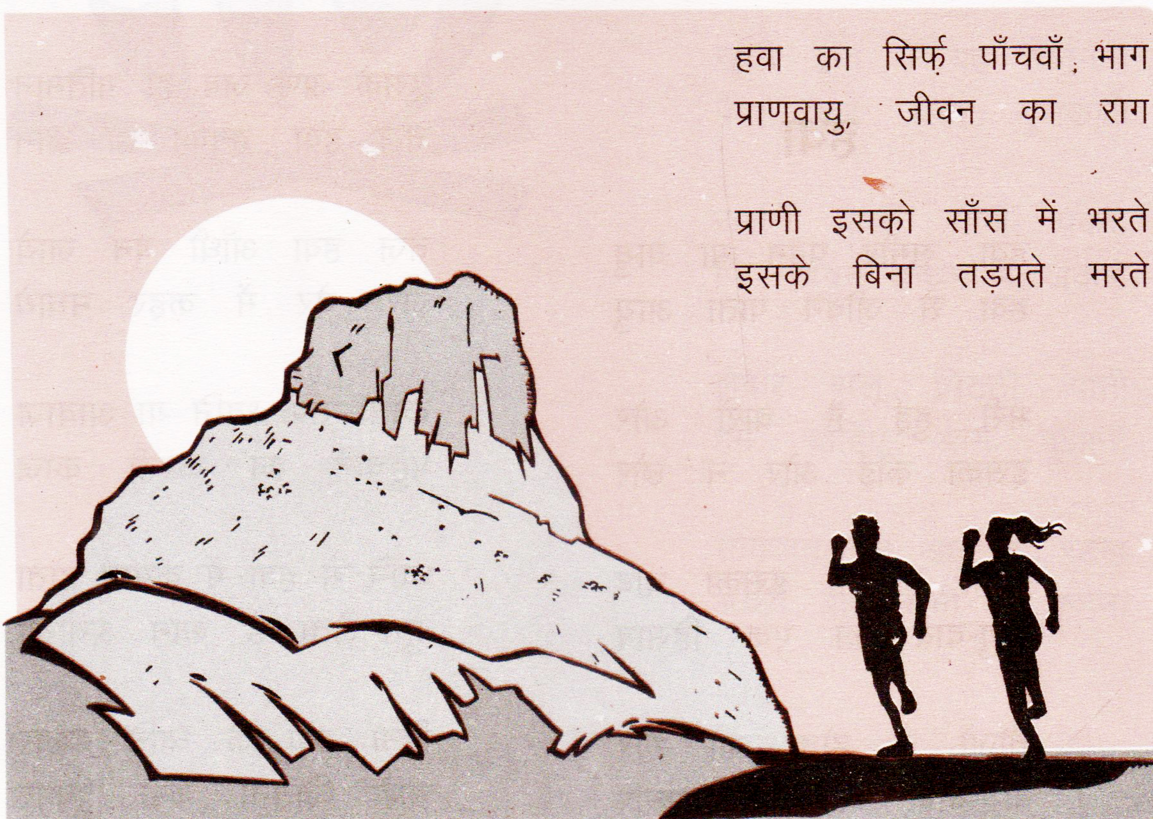
हवा भरी है, सिर्फ हवा
रोगों की है बड़ी दवा

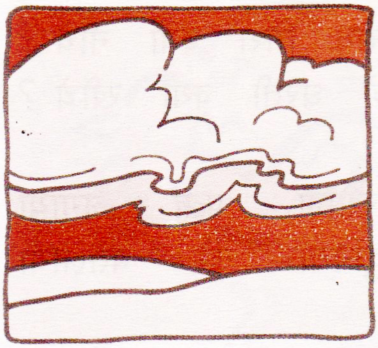
हवा में शामिल हैं कुछ गैस
आक्सीजन है उनमें एक

प्राणवायु है इसका नाम
हमको देती जीवनदान

हवा का सिर्फ़ पाँचवाँ भाग
प्राणवायु, जीवन का राग

प्राणी इसको साँस में भरते
इसके बिना तड़पते मरते







ऋतुएँ—मौसम

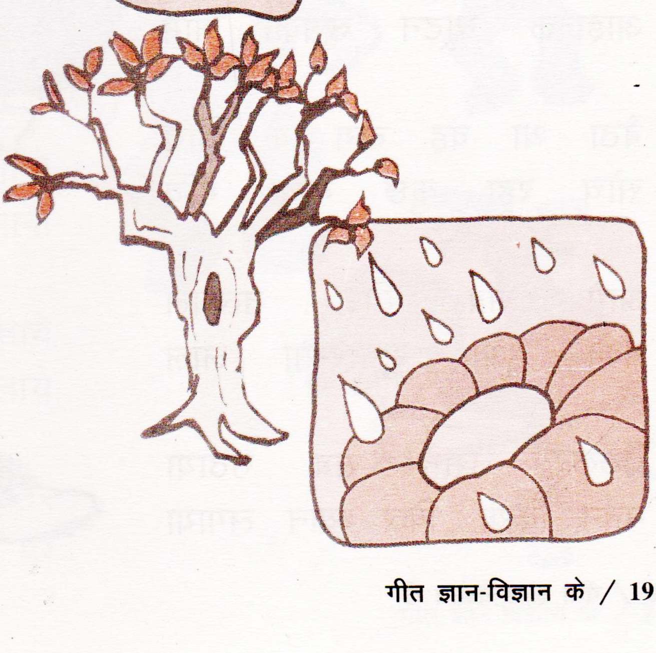


तीन सौ पैंसठ दिन का साल
याद करो तुम, बाल-गोपाल!

एक साल में सूर्य का चक्कर
पूरा करती पृथ्वी चलकर

पूरे सफ़र में, यह एक बार
हमको ऋतुएँ देती चार

गरमी, वर्षा, सरदी भाई!
फिर बसन्त की बारी आई



ऋतुएँ मौसम का आधार
यही प्रकृति का है व्यापार

हर मौसम की अपनी आयु
जगह-जगह बदले जलवायु

ऋतुओं पर आधारित खेती
पैदा करती सोना, रेती



धरती-बल

एक युवक था गुणी महान
आइज़क न्यूटन उसका नाम

बैठा था वह बाग़ के बीच
सोच रहा कुछ माथा भींच

आगे सेब गिरा तत्काल
पका हुआ, सुन्दर-सा लाल

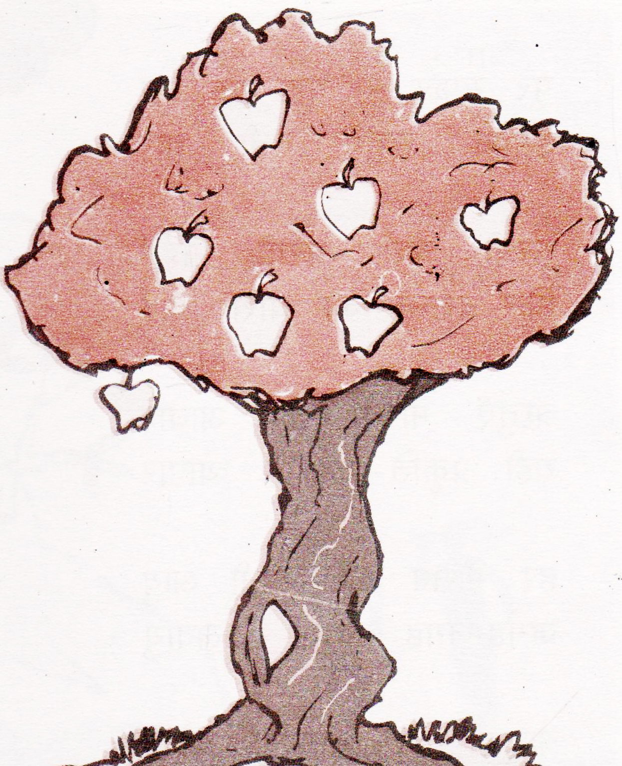
उठकर उसने सेब उठाया
मनन किया, फिर ध्यान लगाया

आख़िर सेब गिरा क्यों नीचे ?
चीज़ों को धरती क्यों खींचे ?

उसने खोजा, पता लगाया
सारी दुनिया को बतलाया

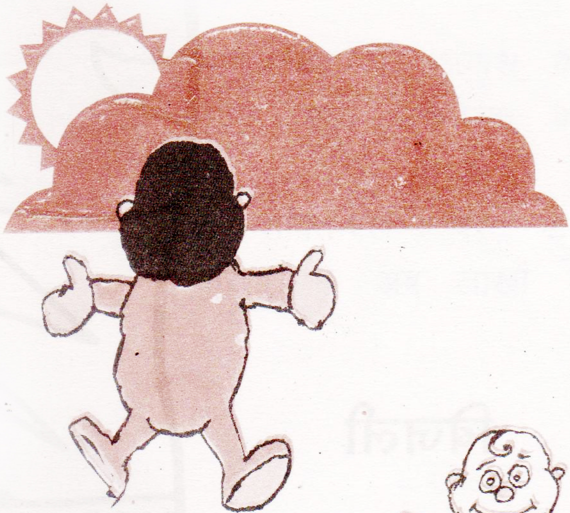
सभी चीज़ पर देकर ज़ोर
धरती खींचे अपनी ओर

यही ज़ोर धरती-बल जानो
धरती को चुम्बक-सा मानो





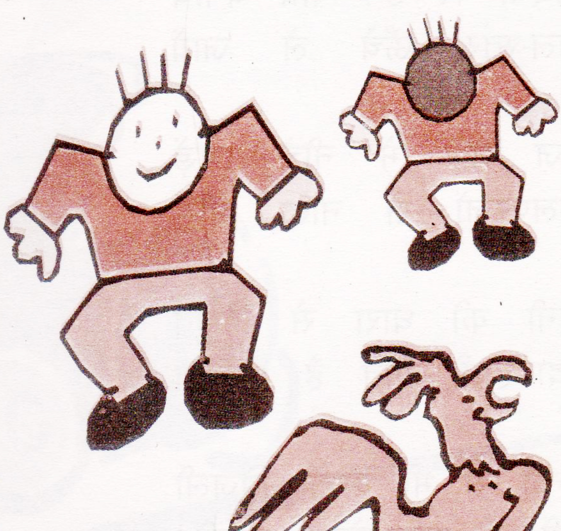
दिशाएँ





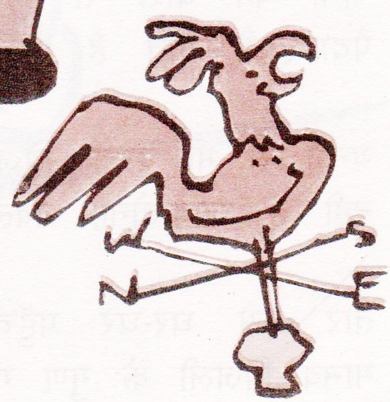
आओ ! तुमको आज बतायें
होती हैं कुल चार दिशायें

जिधर से निकलें सूरजराम
उसको तुम पूरब लो मान



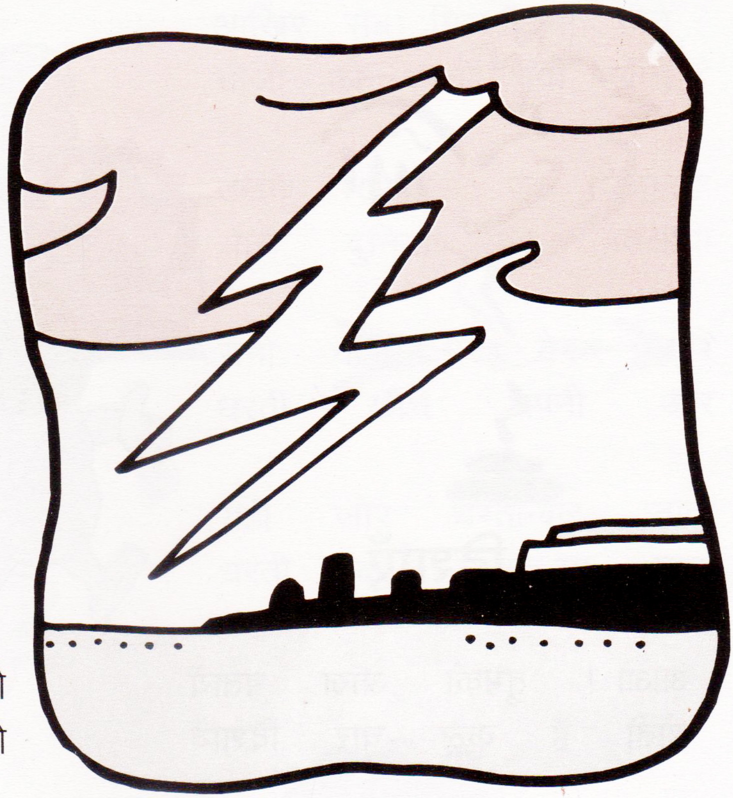
पूरब ओर करो मुँह, श्याम !
दिशा-ज्ञान की विधि आसान

पश्चिम पीठ के पीछे जानो
बाएँ हाथ को उत्तर मानो



दक्खिन दायाँ हाथ बताये
वही हाथ जो क़लम चलाये

पूरब, पश्चिम, दक्खिन, उत्तर
गिन डालो अपनी अँगुली पर



बिजली

बड़ी-बड़ी नदियों का पानी
बहता रहता है मनमानी

नदियों पर हम बाँध बनायें
जल-स्तर ऊँचे ले जायें

तेज़ धार में नीचे छोड़ें
कलपुरज़ों से नाता जोड़ें

पानी की धारा से विद्युत
पैदा होती, रीति है अद्‌भुत

यन्त्रों से भी बनती बिजली
नहीं है जादू-टोना, बबली!

तार इसे घर-घर पहुँचाते
मानव बिजली के गुण गाते

इंजन

एक था लड़का अति शैतान
जेम्स वाट था उसका नाम

घर में सुनकर बोली-ताने
गया रसोई, चाय बनाने

केतली में पानी भर लाया
फिर उसने स्टोव जलाया

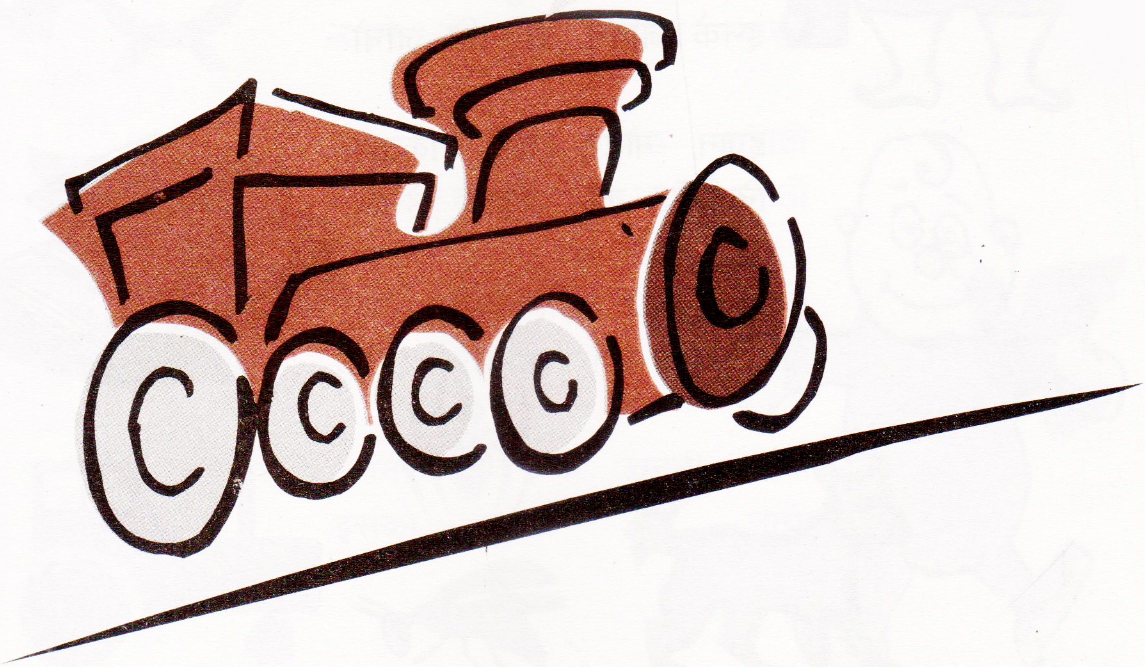
गरम हुआ केतली-पानी
उठे-गिरे ढक्कन मनमानी

चकित हुआ देखकर खेल
कौन रहा है ढक्कन ठेल?

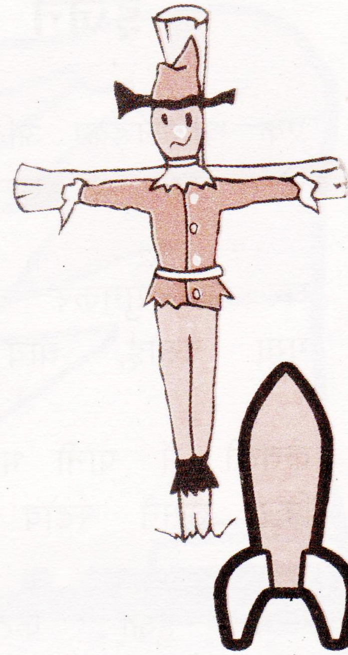
देखा, जाँचा, परखा, जाना
भाप-शक्ति—उसने पहचाना

भाप-शक्ति पर अंकुश करके
इंजन भागे छुक-छुक करके

भाप-शक्ति-बल पर इंसान
करता है अब लाखों काम





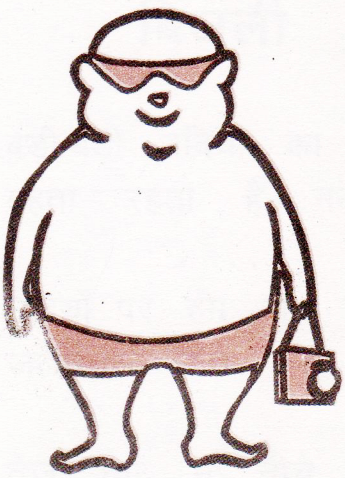


जीव-निर्जीव

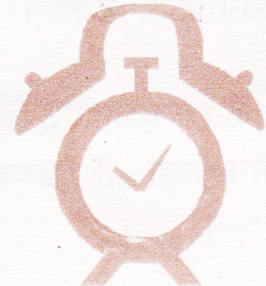
पैदा होकर मरने वाला
साँस हमेशा भरने वाला

भोजन करे, रहे गतिमान
उपजाता अपनी सन्तान

उसको हम कहते हैं जीव
बाक़ी सारे सब निर्जीव

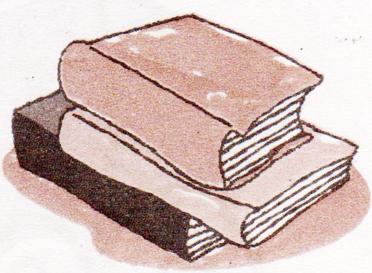


चींटी, चिड़िया, बकरी, भेड़
बन्दर, मानव, पौधे, पेड़



सभी जीव हैं, तुम पहचानो
इनके जीवन की गति जानो

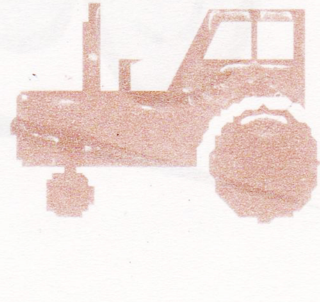
इंजन, मोटर, घड़ी, किताब
निर्जीवों का बड़ा हिसाब













उड़ती चिड़िया

नभ में कैसे उड़ती चिड़िया ?
उड़ते-उड़ते मुड़ती चिड़िया ?

तुमको हम बतला दें, आओ !
इसे जानकर ज्ञान बढ़ाओ

पंखों से यह हवा हटाती
हल्की देह लिये उड़ जाती

छिद्रित हड्डी, वायु के कोष
हल्की देह रचें, सन्तोष !



पंख हमेशा चलते रहते
उड़ने में यह मेहनत करते



धीरे से यह पंख दबाती
जिधर चाहती, है मुड़ जाती

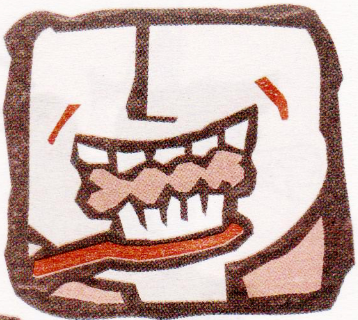
पंखों की गति धीमी करके
उतरे चिड़िया नील गगन से



अपनी चोंच से चुनती दाना
इसको चारा देते नाना

अच्छी आदत–एक





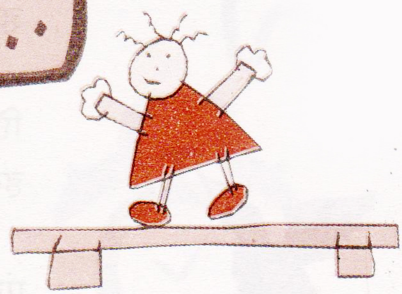
उठो सुबह तुम, कभी न रोओ
हाथ, आँख, मुँह पहले धोओ

शौच-क्रिया से आकर, रंजन
करो दाँत में सुन्दर मंजन



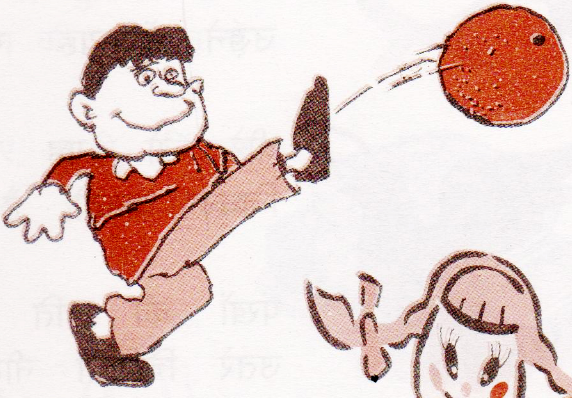
जीभ, नाक की करो सफ़ाई
पैरों की भी करो धुलाई

मलकर बदन करो स्नान
सदा करो तुम कुछ व्यायाम



कंघी करो लगाकर तेल
पढ़ते समय न खेलो खेल

बीता समय न वापस आये
नियमित जीवन सुखी बनाये



टहलो खुली हवा में रोज़
अच्छे बच्चे कहेंगे लोग

ध्यान लगाकर करो पढ़ाई
मेहनत का फल देगी, भाई !





अच्छी आदत—दो

अपना काम स्वयं कर डालो
किसी और पर बोझ न डालो





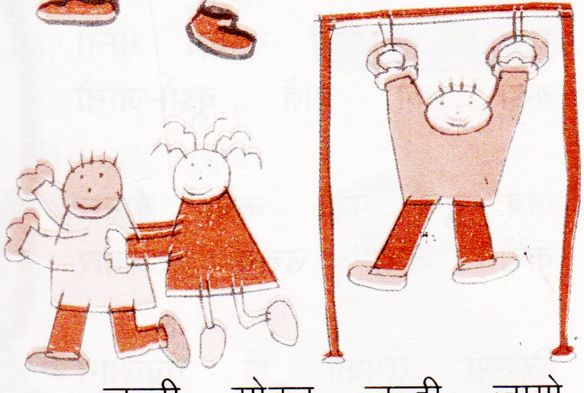
अपनी चीज़ें स्वयं सँभालो
करो आज, कल पर न टालो

कपड़े पहनो धुले व साफ़
सोच-समझकर बोलो बात



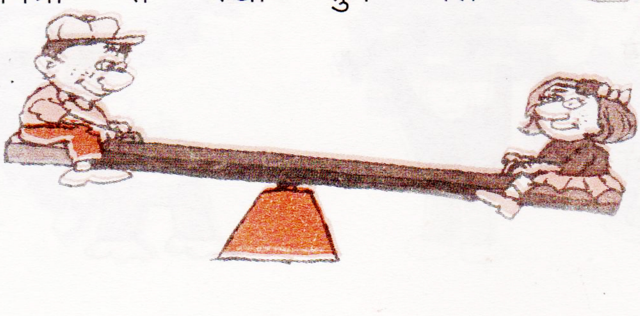
दाँतों से नाखून न काटो
प्रेम-भाव मित्रों में बाँटो

कूड़ा इधर-उधर न फेंको
सदा थूकदानों में थूको



गाली मत दो, झूठ न बोलो
बिना बात के मुँह न खोलो

रोज़ शाम को खेलो खेल
मित्रों से रखो तुम मेल



जल्दी सोकर जल्दी जागो
आलस को बच्चो, तुम त्यागो

स्वस्थ, धनी, उत्तम, गुणवान
अच्छे बच्चो, बनो महान

अच्छी आदत–तीन

गरम व ताज़ा खाना खाओ
बासी को मत हाथ लगाओ

पानी पियो हमेशा साफ़
मत भूलो, यह अच्छी बात

खुली चीज़ तुम कभी न खाना
मेहनत से मत जान चुराना

खुली चीज़ पर मक्खी आयें
विष-जीवाणु छोड़कर जायें

मक्खी, खटमल, जुएँ व मच्छर
तुम रहना इन सबसे बचकर

घर में सबका कहना मानो
बड़ों की बातें बूझो-जानो

जब तुम पड़ो कभी बीमार
करो शीघ्र उत्तम उपचार

जिससे तुमको हो नुकसान
उसे दूर से करो प्रणाम

सुन्दर सेहत वाले बच्चे
दुनिया में होते हैं अच्छे



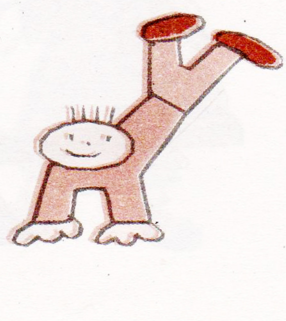












सुरक्षा

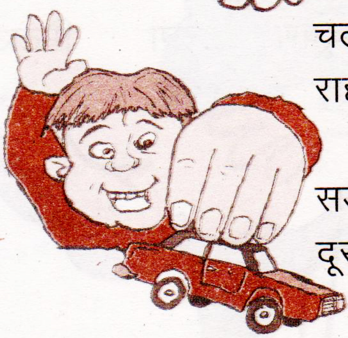




बायीं ओर सड़क पर चलिए
खुली आँख से देखा करिए

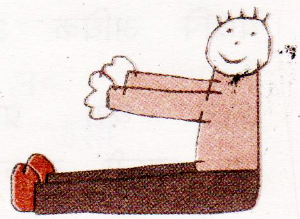


भीड़-भाड़ के बीच न जाना
बिजली को मत हाथ लगाना



चलती बस में कभी न लटको
राह समझ लो, कभी न भटको

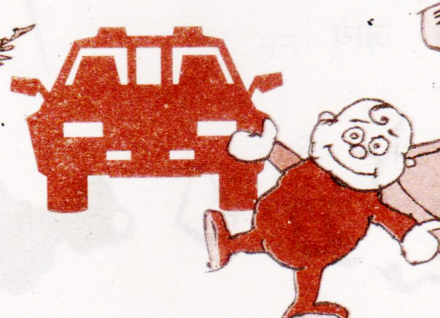
सड़क बीच मत खेलो खेल
दूर रहो जब आए रेल

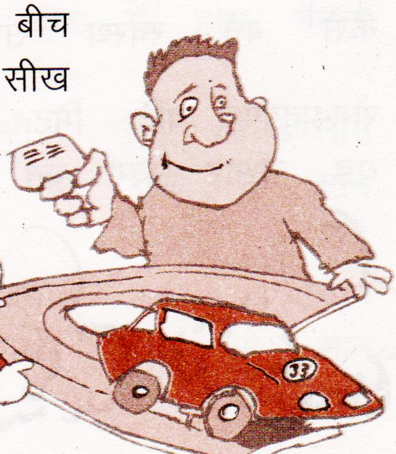


अनजानों की चीज़ न खाओ
गन्दे गाने कभी न गाओ

खूब हँसो मित्रों के बीच
इस कविता की यही है सीख







प्रदूषण



कल-कारखाने, मिल, उद्योग
फैला रहे प्रदूषण रोग

इनका धुआँ, तेज़ ध्वनि, शोर
दूषित करें वायु हर ओर

दूषित हवा पेड़ ले लेते
प्राणवायु बदले में देते

पेड़ की रक्षा करो, लगाओ
वायु-प्रदूषण रोग मिटाओ



कस्बों, शहर का गन्दा पानी
करे प्रदूषित जल मनमानी

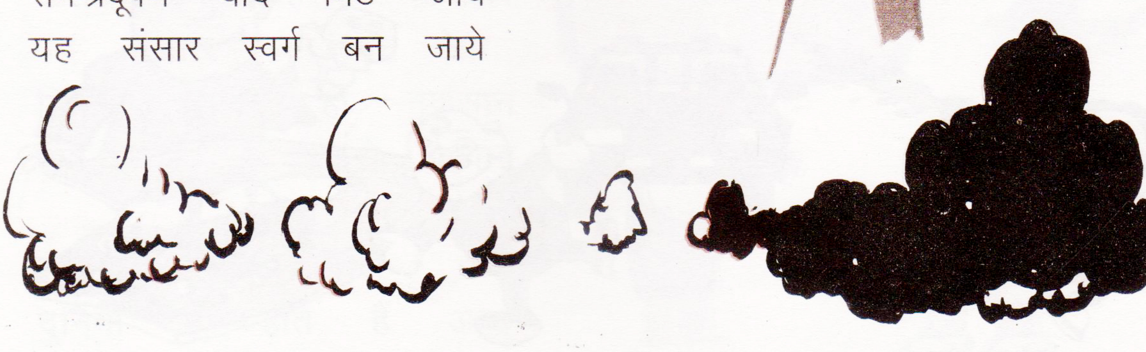
करके हर सम्भव उपचार
रक्षा करो जीव संसार

खाद, रसायन और दवाएँ
यद्यपि अधिक अन्न उपजाएँ

इनसे धरा प्रदूषित होती
वह अपनी ताक़त है खोती

सोचो, समझो, करो विचार
कैसे बने स्वस्थ संसार ?

रोग-प्रदूषण यदि मिट जाये
यह संसार स्वर्ग बन जाये





अच्छा दोस्त

आओ ! अब हम, तुम्हें बतायें
किसको अपना दोस्त बनायें ?

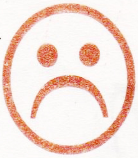
तुमको जो अपनों-सा प्यार
देता हो, ना करे उधार

ऊँच-नीच का भेद न माने
तुमको अपने जैसा जाने

अच्छी बात तुम्हें बतलाये
सुख में, दुख में हाथ बँटाये

करे कभी न लालच-लोभ
मन में पैदा करे न क्षोभ

कभी जताये न एहसान
अच्छा दोस्त उसे लो मान





उत्तम सीख





नशा करे जीवन का नाश
मन हो जाता इसका दास

शौक़-शौक़ में पड़ती आदत
आफ़त बन जाती यह आदत

नशे का थोड़ी देर मज़ा
जीवन को दे कड़ी सज़ा





चोरी करना नशा सिखाए
नशा हमेशा झूठ बोलाये

बीड़ी, सिगरेट, सुरती, पान
गाँजा, भाँग करें नुकसान

दारू, ताड़ी, चरस, अफ़ीम
जीवन करें स्वास्थ्य से हीन



नशेबाज़ मित्रों को टालो
किसी तरह का नशा न पालो

बचपन में जो नशे से बचते
स्वस्थ, सुखी, जीवन में रहते



राधाकृष्ण

ISBN : 978-81-8361-332-3